कबीर की प्रासंगिता

(व्याख्यान)

लेखक
Dr. C. Balakrishna
Assistant Professor
Christ Academy
Institute for Advanced Studies
Bengaluru- 83
Email: balu83500@gmail.com

सारांश(Abstract):— सामान्य तरीके से जन्म लेकर और एक अति सामान्य परिवार में पलकर कैसे महानता के शीर्ष को छुआ जा सकता है, यह महानता कबीर के आचार, व्यवहार, व्यक्तित्व और कृतित्व, से सीखा जा सकता है। कबीर ने औपचारिक शिक्षा बिलकुल ग्रहण नहीं की। वे जुलाहे का काम करते थे। वे निरक्षर थे फिर भी अपने मौखिक उपदेशों से ही उन्होंने चारों युगों की बातें लोगों को बता दीं, जो आज भी उतनी प्रासंगिक है जितनी कल थी।

keywords : मौखिक उपदेशों, जिहाद, मूर्ति पूजा, अछूत, हिन्दू, दोहे

सामान्य तरीके से जन्म लेकर और एक अति सामान्य परिवार में पलकर कैसे महानता के शीर्ष को छुआ जा सकता है, यह महानता कबीर के आचार, व्यवहार, व्यक्तित्व और कृतित्व, से सीखा जा सकता है। कबीर ने औपचारिक शिक्षा बिलकुल ग्रहण नहीं की। वे जुलाहे का काम करते थे। वे निरक्षर थे फिर भी अपने मौखिक उपदेशों से ही उन्होंने चारों युगों की बातें लोगों को बता दीं, जो आज भी उतनी प्रासंगिक है जितनी कल थी। कबीर स्वयं कहते है-

मासी कागद छुयौ नहीं, कलम गहौ नहीं हाथ।
चारिक जुग को महातम,मुखहि जनाई बात ।।

कबीर ने कोई पंथ नहीं चलाया, न कोई नियम बनाया, बस लोगों से कहा कि आप अपने विवेक से काम लें और अपने अंतर्मन में झाँके। कबीर ने निर्गुण भक्ति, निर्मलता, सच्चाई, दर्द, प्रेम, सदाचार नैतिकता, पारम्परिक सौहार्द, धार्मिक सहिष्णुता, उदारता, मानवता आदि गुणों को जीवन में उतारने का संदेश दिया। ये वे गुण और विशेषताएँ हैं, जो हर युग, हर समाज के विकास के लिए आवश्यक हैं। इसमें विरोध, कटुता, तनाव, टकराव, आदि की कोई गुंजाइश नहीं है। सभी इन्हें अपनाना चाहेंगे। इस सृष्टि से कबीर को सार्वभौमिक संत कहा जा सकता है, जिनकी जितनी जरूरत तत्कालीन समाज को थी उतनी ही वर्तमान और भावी समाज को भी रहेगी। तभी तो वे उद्घोषणा करते हैं-

कबीर खड़ा बजार में, सबकी माँगे खैर।
न काहू से दोस्ती, न काहू से बैर।।

कबीर सबका कल्याण चाहते थे। उनका शत्रु कोई नहीं था, न हीं कोई मित्र, इनके शरीर में जबतक प्राण थे तब तक उन्होंने अंधविश्वास सांप्रदाायिकता, असत्य, संकीर्णता और असमानता के खिलाफ जिहाद करते रहे। कबीर कहते थे जब आप मेरे पास आते है तब आप हिन्दू या मुसलमान बनकर कतई मत आइएगा आप केवल मनुष्य बनकर आइएगा तो मेरा सहृदय रूपी कपट सदा आपके स्वागत के लिए खुला रहेगा।

कबीर निर्भीक वक्ता थे, इसलिए उनका विरोध करने वाले बहुत थे। एक बार एक मौलवी संवाद में कबीर को नहीं हरा पाये तो उन्होंने गुंड़ो को भेजा, यह घटना आग की तरह पूरे जुलाहे बस्ती में फैल गयी, सभी लोग कबीर को लेकर बहुत चिंतित थे, सभी हथियार लेकर उनसे लड़ाई करने को तैयार हुए तभी कबीर वहाँ आ जाते है और कहते है- सभी को भाई-भाई मानो मुसलमान हो या हिन्दू। तभी तुम कबीर को जिंदा देख पाओगे वर्ना ये मौलवी और मुल्ला तथा पंड़ित और पुजारी मेरा क्या बिगाड़ेंगे, मैं स्वयं गंगा के जल में अपने को जीवित प्रवाहित कर सब बखेड़ा समाप्त कर दूंगा। बांस ही नहीं रहेगा तुम बांसुरी का राग ढुँढते रहना। सब कुछ जानने के बाद नीरू कहती है- बेटा तुम्हीं तो कहते हो कि कोई शत्रु या मित्र नहीं होता सब एक समान होते है। सब बंधु है तुम्ही बोलते हो-

ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करै, आपहूँ शीतल होय।।

फिर ऐसा कटु शब्द क्यों बोलते हो? स्वयं दुख सहते हो और सबको दुख देते हो। बेटा ऐसा सवाल ही क्यों उठाते हो कि मौलवी तुम्हारे जान के प्यासे हो गये है। तब कबीर माँ से कहते है कि "दीपक क्या पूरे घर के अंधकार को पी पाता है, क्या सारे घर को रोशनी से प्राकाशित कर पाता है? नहीं वह तो अपने इर्द-गिर्द का ही अंधकार दूर करता है।" (देख कबीरा रोया पृ-67) फिर भी वह तिल-तिल जलकर अपने आस-पास उजाला बिखेरता है उसी प्रकार मैं जितना समाज में अंधेरा मिटा सकता हूँ मेरी कोशिश यही है कि मैं जितनी दूर अंधकार काट सकू उतना दूर तक तो प्रकाश फैला सकू। माँ मुझे मत रोको क्योंकि मैं सत्य का एक टुकटा ही सही पर बिखेरू तो सही। सांप्रदायिक सौहार्द को बढ़ाने के लिए कबीर ने जिस मुखरता से तत्कालीन परिस्थितियों पर प्रहार किया था वे आज भी प्रासंगिक है, कबीर ने लोगो से आग्रह किया कि आप अपने विवेक से काम लिजिए-

मूर्ति पूजा का विरोधः- कबीर मूर्ति या पत्थर को पूजने की अपेक्षा अंतर में बसे प्रभु की भक्ति करने पर बल देते थे। कबीर दुनिया के मूर्ति पूजा के पागलपन पर पहार करते है उनका मानना था कि मूर्ति पूजा से ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती इससे अच्छा है कि घर की चक्की को पिसा जाए जिससे आपका तुम्हारा पेट भरता है, कबीर कर्म की पूजा करने के लिए कहते है-

पाहन पूजै हरि मिलै, तो मैं पूजौं पहार।
ता ते तो चक्की भली, पीस खाय संसार।।

भोगवाद के कट्टर विरोधीः- कबीर कर्मवादी मनुष्य थे। उनके लिए कर्म ही सर्वश्रेष्ठ था, उनके जीवन में इसलिए उन्होंने भोगवादी का विरोध किया। खाना, सोना, मौज, मस्ती में जीवन गँवा देने के स्थान पर वे कर्मवाद के हिमायती थे। वे अनावश्यक संग्रह के भी कटु आलोचक थे और केवल उतने ही उपभोग के पक्षधर थे जितने से जीवन- यापन हो सके। लेकिन लोग कहाँ सुलते थे।

इसलिए वे कहते है-

सुखिया सब संसार है, खाए और सोए।
दुखिया दास कबीर है, जागे और रोए।।

गुरू का महत्वः- कबीर गुरू की महिमा का बखान करते हुए कहते है कि गुरू धोबी है और शिष्य कपड़ा की तरह है। जिस प्रकार धोबी कपड़े के अंदर के मैल साबून एंव पानी के माध्यम से दूर करते है वैसे गुरू अपने ज्ञान के जरिए शिष्य के अन्दर के सारे विकारों को (मोह, माया, क्रोध, आदि) विकारों को दूर करते है। ऐसे सच्चे गुरू की प्राप्ति के लिए यदि मुझे मेरा शीश भी देना पड़ेगा तो वह भी सस्ता ही है क्योंकि मेरा शरीर विष की बेलरी के समान है और गुरू अमृत के खान के समान। गुरू ही वह कड़ी है जो हमें जीवन रूपी भवसागर से पार कराते है।

ये तन विष की बेलरी ,गुरू अमृत की खान ।
शिश दिये जोगुरू मिले,तो भी सस्ता जान।।

जाति-प्रथा का खण्ड़नः- कबिर भक्त और कवि बाद में थे पहले सच्चे अर्थों में समाज सुधारक थे। जब उनका अभिभाव हुआ था तब समाज में अंधविश्वास छुआछात जैसी कुरीतियाँ चारों ओर व्याप्त यी उन्होंने समाजिक बुराईयों को उखाड़ फेंकने का भरसक प्रयास किया। कबीर वर्ण-व्यवस्था के कट्टर विरोधी थे। वे स्वयं एक ऐसे परिवार में पले-बढ़े थे जो तत्कालीन समाज में अछूत कहलाता था। अतः इस व्यवस्था के दर्द को उन्होंने स्वयं झेला था। इसलिए वे लोगों को समझालते थे कि जन्म से सब मनुष्य समान हैं। भगवान ने अपनी तरफ से ऐसी कोई व्यवस्था नहीं की है। वे जात-पात से कर्मो को श्रेष्ठ मानते थे-

उँचे कुल का जनमिया, करनी उँच न होय ।
सुबरन कलस सुरा भरा, साधु निन्दत सोय ।।

इतना ही नहीं, कुलीन और उच्च वर्ग को चेतावनी देने के बाद वे नैतिक रूप से झकझोरते भी है।

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अतिदूर।।

ऱाम-नाम की महिमाः- कबीर को राम नाम के जो गुरू मंत्र मिला था अपने जीवन भर के सत्यान्वेषण में उन्होंने उसे परम सत्य के रूप में पाया. उन्होंने पाया कि उनके राम सर्वशक्ति, सर्वव्यापक आत्मा के रूप में घट-घट में बसे हैं। तभी तो वे कहते हैंः-

राम नाम की लूट है, लूट सके तो लूट।
अंत काल पछताएगा, जब प्राण जाएँगे छूट।।

जैसी करनी वैसी भरनीः- कबीर कहते है कि जो व्यक्ति जैसा कर्म करेगा उसे उसके कर्म के अनुसार फल मिलेगा इसलिए दूसरे के बुरे कर्म देखकर हमें दुखी नहीं होना चाहिए क्योंकि हम चाहकर भी यदि उसे सुधार नहीं पाते तो दुखी क्यों होना, उसके बुरे कर्म देखकर। कबीर कहते है कि यदि आपका घर कसाई के घर के पास है इसमें आपका क्या दोष जो करेगा उसे वैसा फल मिलेगा-

कबीरा तेरी झोपड़ी,कल कुटीये के पास ।
जो करेगा वह भरेगा, तू काहे उदास।।

दुर्बलों के पक्षधरः- कबीर जीवन भर दरिद्रनारायण की सेवा करते रहे। दबे-कुचले समाज को उत्थान के लिए वे निर्भीकता से दमनकर्ता के सामने उसका पक्ष रखते थे और समाज में व्याप्त बुराइयों कुरीतियों, पाखंड़ों आदि विकृतियों को जड़ से दूर करने के लिए छटपटाते रहते थे। कबीर के समय के समाज में दुर्बलों की दशा अत्यंत दयनीय थी। उनकी दशा देखकर कबीर कहते है-

दुर्बल को न सताइए, ताकी मोटी हाय।
बिना जीव की साँस सो, लौह भसम होइ जाय।।

अनुभव एवं आँखों देखी बातों पर जोर देते हैः- कबीर पढ़े लिखे न थे, किन्तु उनमें अनुभूति की सच्चाई एवं अभिव्यक्ति का खरापन विधमान था। वे अनुभवजन्य सत्य पर विश्वास करते हैं न कि शास्त्रोक्त बातों पर। शास्त्र के पंडित को वे चुनौति देते हुए कहते हैं-

तू कहता है कागद लेखी, मैं कहता आंखिन की देखी।
मैं कहता सुरझावन हारी, तू राखा इरझोय रे।

जीवन की क्षणभंगुताः- कबीर कहते है कि जीवन क्षणभंगु है। पानी के बुलबले की तरह मनुष्य का जीवन होता है, इसलिए राम, रहीम, कृष्ण, करीम जो भी कहना चाहे कहो पर पूरी तरह से उसकी शरण में चले जाओ। जीवात्मा में ही परमात्मा का निवास है जब शरीर को जीवात्मा एवं परमात्मा का मिलन होता है।

पानी केरा बुलबुला,अस मानुस की जात।
देखत ही छिप जाएगा,ज्यों तारा परभात।।

जब सब जीवात्मा एक समान है फिर सामाजिक स्तर पर आपसी भेद क्यों हो। जल में रहकर मछली कभी प्यासी नहीं रह सकती है वैसे ही परमात्मा के होते मनुष्य बेसहारा नहीं हो सकता है।

जल में कुंभ कुंभ में जल है, बाहर भीतर पानी।
फूटा कुंभ जल जलहिं समाना, यह तत सुनो गियानी ।।

हिन्दू- मुस्लिम पाखण्ड़ का खण्ड़नः- कबीर ने हिन्दू और मुसलमान दोनों को फटकारा ।वे एक ओर हिन्दूओं के तीर्थाटन, छापा, तिलक का विरोध करते है तो दूसरी ओर रोजा, नमाज, अजान का, वे कहते है कि माला फेरने से नहीं, मन की शुध्दि से ईश्वर प्रसन्न होते है वे साफ कहते हैं कि हिन्दू और मुसलमान दोनों को सही मार्ग नहीं मिला-

अरे इन देउन ऱाह न पाई
मुसलमान के पीर औलिया मुरगी मुरगा खाई।
खाला केरी बेटी ब्याहै घर ही में करै सगाई।।
हिन्दू अपनी करै बड़ाई गागर छुअन न देहीं।
वेश्या के पायन तर सौंवे यह देखो हिंदुआई।।

मन की पवित्रताः- पवित्र नदियों में शारीरिक मैल धो लेने से कल्याण नहीं होता जब तक मन का मैल साफ न हो। जैसे मछली हमेशा जल में ही रहती है लेकिन इतना धुलकर भी उसकी दुर्गंध नहीं समाप्त होती है-

न्हाए धोए क्या भया,जो मन मैला न जाय।

मीन सदा जल में रहै, धोए बास न जाय ।।

विश्व बन्धुत्व का भावः- कबीरदास कहते है कि मनुष्य जब अहंकार त्याग देता है, तब उसके मन में ईश्वर का बास होता है। संसार में मनुष्य का दुश्मन केवल उसका अहंकार ही है यदि मनुष्य ने इसे ही छोड़ दिया और अपने चंचल मन पर काबू कर लिया तब सभी उस पर दया करेंगे।

जग में बैरी कोउ नहीं, मन सीतल होय।
यह आपा तू डारि दे, दया करै सब कोय।।

प्रेम का महत्वः- कबीर ने अपने उपदेशों में प्रेम का भी बहुत महिमा मंड़न किया है। वस्तुतः प्रेम ही है, जो देश को देश से, समाज को समाज से, व्यक्ति को व्यक्ति से और धर्म को धर्म से जोड़ता है इसलिए वे कहते हैं-

पोथी पढ़ी-पढ़ी जग मुआ,पंडित भया न कोय।
ढ़ाई आखर प्रेम का,पढ़े सो पंड़ित होय ।।

सत्य की महिमाः- कबीर सत्य-विचार को जीवन के लिए अहम मानते थे। वे कहते थे अगर आपके विचारों में सत्यता नहीं है तो संध्या, व्रत, तप, तीर्थ, यज्ञ, हवन, धार्मिक कर्मकांड़ नमाज अरदास करने-कराने से कोई फायदा नहीं हो सकता। तभी वे कहते हैं-

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
पल में परलै होयगा, बहुरि करैगा कब्ब।।

मनुष्य की प्रवृत्ति पर कबीर के विचारः- कबीर मनुष्य की प्रवृत्ति के बारे में कहते है कि मनुष्य का स्वभाव ही ऐसा है कि उसे सबकी बुराई दिखाई देता है किन्तु अपनी बुराई कतई नहीं दिखाई देता है, इसे देखकर कबीर कहते है-

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा अपना, मुझसे बुरा न कोय।।

कबीर आगे कहते है कि जो लोग अपनी बुराई दूसरों के मुँह से सुनकर दुखी होते है उन्हें तो खुश होना चाहिए और निंदा करने वाले को अपने आँगन में जगह देना चाहिए। क्योंकि निंदक व्यक्ति आपसे कुछ लिये बिना ही आपके अंदर के मैल को साफ कर देता हैं।

निन्दक नियरे राखिये, आँगन कुटी छबाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय।।

निष्कर्षः- महात्मा कबीर अपनी कालजयी रचनाओं के कारण युगों-युगों तक हमारे बीच उपस्थित रहेंगे। उनकी वाणी का अनुसरण करके हम अपना वर्तमान ही नहीं भविष्य भी सँवार सकते हैं। कबीर आज भी उतने ही प्रासंगिक है जितने उस काल में थे। उनकी बातें आज और कल सदा ही प्रासंगिक रहेगा। जहाँ कहीं भी अंधविश्वास घिरेगा कबीर वहीं एक दीपक बनकर जल उठेगें। कोई उन्हें विगत साढ़े पाँच सौ वर्षो में कोई कबीर को नकार नहीं पाया।कबीर आज भी अपनी बातों पर अड़े है क्योंकि यह साधारण है। अभिजात्य् नहीं सीधे मिट्टी सेनिकले हैं इनकी जड़े जमीन में गहरे पैठ चुकी है। इनकी भाषा प्रवाहमय जल है, सर्वत्र गया है इसलिए हजारी प्रसाद द्वेदी जी ने भाषा का डिक्टेटर कहा है। भगवतीशरण मिश्र अपने पुस्तक देख कबीरा रोया में लिखते है- अब कबीर नहीं पैदा होगा इस धरती पर ऐसा आदमी। ऐसा निर्भीक, ऐसा समतावादी, ऐसा मानवता- प्रेमी, ऐसा राम -भक्त और सबसे उपर ऐसा आशु-कवि जिसके मुख से दोहे और सखियाँ, रमैनी और उलटबांसिया झरने से निकलते जल की तरह निर्बाध, निर्द्वन्द्व, अनायास, अप्रयास झरती थीं।

----------00--------

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. देख कबीरा रोया. भगवतीशरण मिश्र
2. कबीर दोहा वली. सं. नीलोत्पल
3. कबीर ग्रंथवली. गोविन्द सिंह

----------00--------